कष्ट-लिंग
क्या तकलीफ़ भी स्त्री-पुरुष होती है?
क्या कष्ट भी लैंगिक पहचान लिये है?
डॉ. स्कन्द शुक्ल

कष्ट-लिंग

लेखक: डॉ. स्कन्द शुक्ल

ई-प्रकाशन: 2019

सभी चित्र इन्टरनेट से साभार.

लेखक

डॉ .स्कन्द शुक्ल

22 सितम्बर 1979 को राजापुर, बान्दा में जन्म. वर्तमान में लखनऊ में गठिया-रोग विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत. वृत्ति से चिकित्सक होने के कारण लोक-कष्ट और उसके निवारण से सहज जुड़ाव. साहित्य के प्रति गहन अनुराग आरम्भ से. अनेक कविताएँ-कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित. साथ ही दो उपन्यास 'परमारथ के कारने' और 'अधूरी औरत' भी. सामाजिक मीडिया पर भी अनेकानेक विज्ञान-स्वास्थ्य-समाज-सम्बन्धी लेखों-जानकारियों के माध्यम से वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार में सक्रिय.

वस्तुतः जो कुछ भी मानवीय है, वह लैंगिकी का आवरण लिये है. जो कुछ भी स्त्री-पुरुष 'का' है, वह स्त्री-पुरुष 'को' धारण किये हुए है. शरीर की हर कोशिका, ऊतक, अंग, भाव-मनोभाव, आचार-व्यवहार एवं कार्यकलाप इस लैंगिक बँटवारे में बँटते चले जाते हैं. कई लैंगिक अपवाद सामने आते हैं, लेकिन कदाचित् वह प्रकृति का अपने-आप को साधारण न समझने की मानो मनुष्य को हिदायत है. अपनी विविधताओं से वह उसे विस्मित ही नहीं करती, उसे चेताती भी रहती है कि सरलीकरण से तुम मुझे साध न पाओगे.

जो जिससे उपजा है, वह उस-सा है. स्त्री का कष्ट स्त्रीत्व धारण किये है, पुरुष का कष्ट पुरुषत्व. शरीर की कोई भी आंगिक अक्षमता लिंग-निरपेक्ष पूरी तरह से हो यह सम्भव नहीं. ऐसे में चिकित्सकों को रोगों के निदान व उपचार के समय उनकी लैंगिक पहचानों को भूलना नहीं चाहिए.

हिमानी को छब्बीसवें साल में र्यूमैटॉयड आर्थ्राइटिस नामक गठिया-रोग हुआ. इस रोग के कारण उसकी उँगलियों में दर्द और सूजन रहने लगे. इसी दौरान उसका कहीं प्रेम-सम्बन्ध चलने लगा. उसने यह बात किन्तु अपने प्रेमी के सामने उजागर नहीं की. अथवा कदाचित् डॉक्टर से उचित परामर्श लेती और रोग को समझ पाती, उसका विवाह हो गया.

विवाह के तीन महीने बाद ही वह गर्भवती हो गयी और इस दौरान उसका गठिया-रोग भी दब गया. अनेक ऑटोइम्यून रोग, जिनमें र्यूमैटॉयड आर्थ्राइटिस भी एक है, कई बार गर्भावस्था के दौरान शान्त हो जाते हैं. सन्तान-जन्म के एक महीने बाद ही किन्तु रोग के कारण पुनः जोड़ों में असह्य दर्द उठा. बात खुल गयी. पति डॉक्टर के पास लेकर पहुँचा. डॉक्टर ने रोग की पुष्टि की और दवाएँ देनी शुरू कीं. लेकिन इस दौरान पति के मन में यह बात रह-रह कर उभरने लगी कि उसकी पत्नी को जोड़ों की एक बीमारी है, जिसे उसने शादी से पहले उससे छिपाया था.

लड़की का कहना था कि उसने छिपाया नहीं था. उसे स्वयं यह नहीं मालूम था कि उसे अमुक रोग है. उसके जोड़ों में हल्के लक्षण रहते थे. वे आया-जाया करते थे. लेकिन लक्षण कब रोग बन गये, पता ही नहीं चला. हर लक्षण को कब रोग कहना-मानना है, वह

नहीं जानती. अब जब बात स्पष्ट हुई है, तो वह भी पति के साथ ही विस्तृत सच जान रही है.

इस घटना को पढ़ते समय आपके मन में तमाम बातें उठ सकती हैं. शायद वह रोग के बारे में जानती रही हो और बताया न हो. सम्बन्ध टूटने के डर से बताना न चाह रही हो. अथवा वही सत्य हो, जो वह कह रही है. वह रोग को रोग की तरह न जानती हो. उसे वह महज़ एक लक्षण लगा हो, जो कुछ दिनों-महीनों में सम्भवतः ठीक हो जाए. पर अब सच यही था कि रोग के कष्ट के साथ निभ रही गृहस्थी में एक अविश्वास की तरेड़ पड़ चुकी थी. ऐसा अविश्वास जो एक दिन अन्ततः उसके दाम्पत्य को तलाक़ तक ले गया.

इलाज के दौरान वह कुछ सालों के लिए ग़ायब हो गयी. फिर जब दिखाने आयी, तो यह भेद खोला कि अब वह पति से अलग हो चुकी है और बच्चे से भी. पति के परिवार वाले बड़े प्रभावशाली लोग हैं. उन्होंने उसे अपनी तीन साल के बेटी को ले जाने नहीं दिया और उसे निकल जाने को कहा. मैंने क़ानूनी सहायता की बात पूछी तो कहने लगी कि शरीर पहले ही एक रोग से जूझ रहा है और अब कितने रोग लेकर जिया जाए. इसलिए हट जाना ही सबसे सटीक क़ानूनी उपचार उसे जान पड़ा. एक ठीक-ठाक नौकरी ढूँढ़ी और पैसे कमाने लगी. अब जब चीज़ें दोबारा पटरी पर आती दीख रही हैं, तो उपचार के लिए पुनः आयी है.

तीन साल में पति से उसके सम्बन्ध बुरे रहे, तो इधर गठिया-रोग ने भी उसे छोड़ा नहीं. अनियमित उपचार का खामियाज़ा

उसके जोड़ों को भुगतना पड़ा. हाथों-पैरों में अब केवल कष्ट-जनित विकलता ही नहीं थी; अब वह विकलता विकलांगता में बदलती हुई सबको नज़र आने लगी थी. हाथों की उँगलियों का टेढ़ापन, घुटने में सूजन के कारण चाल में बदलाव और आँखों में उल्टी-सीधी दवाओं के सेवन के कारण मोतियाबिन्द. चेहरे पर कुछ अवांछित बाल और अतिरिक्त सूजन. बहुत कुछ अनकहे ही उसको देखकर मैं समझ गया था.

हमने जहाँ छोड़ा था, वहीं से रोगी-डॉक्टर-सम्बन्ध को पुनर्जीवित किया. इलाज अब ठीक से लेना, कोई लापरवाही न करना. उसने हामी भरते हुए कहा कि लापरवाही वह करती नहीं, हालात करा देते हैं. अब प्रयास करेगी कि सामाजिक हालात से भी शारीरिक हाल को छिपा कर रखे. अन्यथा समाज बीमार औरत को देखकर सहानुभूति कम प्रदर्शित करता है और उसके शोषण में किसी-न-किसी रूप में सहचर बन जाता है.

मैंने उसे और नहीं कुरेदा. उपचार जब ठीक से लगातार चला तो वह बेहतर भी हुई. इस बीच उसके कार्यस्थल पर एक दूसरे युवक से उसकी मुलाक़ात हो गयी और उसके साथ उसका सम्बन्ध चल पड़ा. एक साल के बाद ही उसने जब पुनः शादी की इच्छा प्रकट की, तो मैंने उसे सचेत करते हुए बधाई दी. यह कहना ज़रूरी समझा कि वह अपनी सारी तकलीफ़ उस व्यक्ति को बता ज़रूर दे. उसने वैसा ही किया और फिर छह महीनों बाद वह विवाह के बन्धन में बँध गयी.

नियति कोई अदृश्य सत्ता है अथवा नहीं, पता नहीं. किन्तु वह प्रकृति का वह रहस्यमय विद्रूप व्यवहार अवश्य है , जिसे हम रोग कहते हैं. साल-भर गुज़रने के बाद उसके पति का मेरे पास फ़ोन आया. कहने लगा कि कुछ ज़रूरी बात करना चाहता है. मैंने

उससे तुरन्त आने को कहा. मिलने पर उसने यह जानने की इच्छा जताई कि क्या हिमानी कभी माँ बन सकती है.

'कभी माँ बन सकती है' ऐसा प्रश्न था, जो अटपटा था. 'हिमानी माँ क्यों नहीं बन सकती' मैंने उत्तर दिया. उसे जो रोग है, वह नियन्त्रित है. ऐसे में वे दोनों बच्चा प्लान कर सकते हैं और मातृत्व-पितृत्व का सुख उठा सकते हैं. तो यह बात ही दिमाग़ में कैसे आयी कि हिमानी के माँ बनने में कोई समस्या है. मैंने उससे अपनी बात खोलकर सविस्तार कहने को कहा, ताकि मैं उसके प्रश्नों के बेहतर उत्तर दे सकूँ.

उसने कहा कि बीते कई महीनों से वे दोनों सन्तान के लिए प्रयास कर रहे हैं. लेकिन असफल रहते आये हैं. इस बाबत वे दो स्त्री-रोग-विशेषज्ञों से भी मिले हैं. उन्हें सारी बात बतायी भी है. कहीं कोई कमी निकली नहीं है सिवाय गठिया-रोग के. यद्यपि गायनेकोलॉजिस्टों का मानना है कि इस रोग से प्रजनन-क्षमता का सीधा कोई सम्बन्ध नहीं. लेकिन वह उनके कहे पर विश्वास नहीं कर पा रहा. इसलिए मेरे पास सच जानने आया है.

मैंने उससे पूछा कि मेरे कहे में ऐसा क्या है, जो उसे सच लगेगा. उन स्त्री-रोग-विशेषज्ञों का कहा सच क्यों नहीं लग रहा? उसका उत्तर था लम्बा सम्बन्ध. जितने दिनों से वह हिमानी के प्रिय के रूप में साथ है, उससे कहीं अधिक दिनों से हिमानी मुझे डॉक्टर के तौर पर जानती है. ऐसे में उसी ने रोज़-रोज़ की झाँय-झाँय के दौरान मुझसे मिलकर सच जान लेने की सलाह दी है.

रोज़ झाँय-झाँय क्यों हो रही है? मैं मन में सोच रहा था और उससे पूछ भी पड़ा था. सन्तानवती-सन्तानवान् होना किसी स्त्री के हाथ में तो नहीं, न पुरुष के. यद्यपि इस रोग में अमूमन सन्तानहीनता नहीं होती, लेकिन अगर यह नयी समस्या आ ही गयी है तो इसके लिए समुचित जाँचें और उपाय कराये जाएँ. पता किया जाए कि सन्तान न होने की वजह कहाँ है. और फिर उम्मीद है कि सब ठीक हो जाएगा.

तब वह मुझसे और खुला और कहने लगा कि उसका यौन जीवन सुखमय नहीं है. हिमानी सेक्स-सम्बन्ध के लिए बहुधा रज़ामन्द नहीं होती और कोई-न-कोई बहाना कर जाती है. अक़्सर वह दर्द की ही बात उठाती है. क्या दर्द से यौन अक्षमता का कोई सम्बन्ध है? क्या उसके जोड़ों की समस्या उसे सेक्स में अरुचि दे रही है? शायद इस अरुचि के कारण ढंग से सन्तान-प्रयास न हो पा रहे हों? इसीलिए यह समस्या आ रही हो.

मैंने मन में सोचा कि सेक्स और सन्तान को भारतीय समाज कितना लीनियर सोचता है. सेक्स होता है, तो सन्तान बहुधा होनी ही चाहिए. सेक्स के बिना सन्तान कदापि नहीं हो सकती. सन्तान के बिना चलता सेक्स युवा पति-पत्नी में अच्छा नहीं समझा जाता. इन सब बातों को सोचते हुए मैंने उसे सलाह दी कि वह हिमानी के साथ मुझसे एक युगल-रूप में मिले और तब इस विषय में मैं अपनी राय (उसे नहीं) उन्हें दूँगा.

हिमानी के आने पर मैंने उसके जोड़ों का विस्तृत मुआयना किया तो पाया कि उसके कूल्हों में समस्या होने लगी है.

नतीजन उसे पैर मोड़कर बैठने और चलने में दिक्कत आती है. यही वह समस्या है, जिसकी ओर उसका पति उस दिन इशारा कर रहा था. साथ ही अरुचि वाली बात भी कुछ हद तक सच है. दर्द के कारण रहता चिड़चिड़ापन और दवाओं के कारण मन अच्छा न रहना इसके एकमात्र कारण न सही, लेकिन योगदान अवश्य देते हैं. ऐसे में मैंने हिमानी को उपचार में ध्यान देते रहने के साथ दो बातें सुझायीं. पहली कि वह अपनी स्त्रीरोग-विशेषज्ञ से मेरी बात कराये और दूसरी यह कि एक अच्छे मनोवैज्ञानिक काउंसलर से मिले. इतना सब करने के बाद ही देह-मन-समाज की इस ऑक्टोपसीय बीमारी का समुचित उपचार करते बनेगा.

स्त्री-रोग-विशेषज्ञ से बात हुई तो नया रहस्य प्रकट हुआ. समस्या हिमानी के पति के वीर्य में थी. लेकिन वह इसे कबूलने और उपचार कराने की बजाय सारा दोष अपनी पत्नी के रोग पर डाले जा रहा था. इस बाबत जब हिमानी दुबारा मुझसे मिली तो उसने बताया कि वह अपने माता-पिता के घर वापस आ गयी है. सम्बन्ध टूट चुका है. उसके पति के अन्यत्र सम्बन्ध हैं और वह उसे तलाक़ देना चाहता है. इधर उसकी कूल्हे की तकलीफ़ भी बहुत बढ़ गयी है और आँखों के लेंस भी धुँधला गये हैं. ऐसे में मैंने उसे एक ऑर्थोपेडिक सर्जन और ऑफ़्थैल्मोलॉजिस्ट से मिलने की सलाह दी ताकि वह इन समस्याओं से निजात पा सके.

फिर वह लगभग एक साल तक नहीं आयी. जब आयी, तो चाल-ढाल में एक सुखद तेज़ी थी. पूछने पर उसने बताया कि अब उसने कूल्हों और आँखों का ऑपरेशन करा लिया है. रोग भी इधर परेशान नहीं कर रहा, बस जोड़ों में जो टेढ़ापन है, वह स्थिर बना हुआ है. इस तरह से अब वह पुनः एक नौकरी पा गयी है और फिर से पैसे आने लगे हैं. साथ ही एक ख़ुशख़बरी और भी है, जो वह मुझसे साझा करना चाहती है.

अपनी रिश्तेदारी में एक महिला के माध्यम से उसे सन्तान हुई है. माध्यम से अर्थात्, मैंने पूछा. तब उसने सरोगेसी का नाम लिया. उसकी ही एक मौसेरी बहन एकाकी और निःसन्तान थी. वे दोनों महिलाएँ एक योग्य स्त्रीरोग-विशेषज्ञ से मिलीं और उनसे अपनी समस्या बतायी. मैडम ने हिमानी और उसकी बहन को सारी बातें समझायीं और फिर सन्तान को सम्भव किया. हिमानी का अण्डाणु लिया गया और उसे शुक्राणु-बैंक के एक शुक्राणु से निषेचित कराकर मौसेरी बहन के गर्भ में प्रत्यारोपित करा दिया गया. नौ महीने बहुत ध्यान रखने के बाद एक स्वस्थ पुत्र का जन्म हुआ. दो व्यक्त माँओं और एक अव्यक्त पिता का यह पुत्र आज मेरे सामने था और मैं उसके लिए विज्ञान को मन-ही-मन धन्यवाद दे रहा था.

यह हिमानी की विकल अंगता, विकल देहिता और विकल सामाजिकता की कहानी है. आप इसमें ढेरों भाँति-भाँति के उत्तर पा सकते हैं. अनेक अकुलाये प्रश्न भी उठा सकते हैं.

लेकिन अन्त में आप भी मेरी ही तरह धन्यवाद पर थिरेंगे.